# पाठः द्वाविशः

# गीतामृतम्

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव, भारत।

सेनयोरुभयोर् मध्ये विषीदन्तमिदं वचः।।1।।

शब्दार्थ :– तम् उवाच :– उसको कहा , हृषीकेश :– कृष्ण ने, प्रहसन्न इव :– हंसते हुए, भारत :–अर्जुन को, सेनयो :– सेनाओं , उभयो :–दोनों पक्षों की मध्ये :– बीचमें, विषीदन्तं :– दुःखी होते हुए ,वचः :– वचन ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ द्वाविंशः गीतामृतम् में से ली गई हैं। इसमें कवि ने अर्जुन के शस्त्र त्याग कर देने पर दोनों सेनाओं के बीच में अर्जुन को जो कर्म करने का ज्ञान दिया था उसी का वर्णन है ।

सरलार्थ :– श्री कृष्ण ने हॅसते हुए दोनों सेनाओं के बीच में[खड़े हुए ]शोकम मग्न अर्जुन से ये वचन कहे ।

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं, यौवनं ,जरा ।

तथा देहान्तर –प्राप्तिर् धीरस् तत्र न मुह्यति ।।2।।

शब्दार्थ :– देहिनः :– इस शरीर के जीवात्मा के, देहे :– शरीर में अस्मिन :– इस कौमारं :– कुमार अवस्था देहान्तर :– दूसरे शरीर की, धीरस :– धैयवान ,मुहयति :– मोह नहीं करते ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठय पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ द्वाविंशः गीतामृतम् में से ली गई है इसमें कवि ने अर्जुन के शस्त्र त्याग कर देने पर दोनो सेनाओं के बीच नें अर्जुन को जो कर्म करने का ज्ञान दिया था उसी का यहॉ वर्णन है ।

सरलार्थ :– श्री कृष्ण`कहते है कि जैसे जीवात्मा की इस देह में कौमार्य, यौवन, बुढापा होतें है वैसे ही दूसरी देह की प्राप्ति होती है । इस विषय में धैर्यवान मोह नहीं करते भाव है कि आत्मा को नित्य समझ लेने से धीर वुद्धिमान इस विषय में मोहित नहीं होता।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय

नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा–

न्यन्यानि संयाति नवानि देही ।।3।।

शब्दार्थ :– गृहणाति :– ग्रहण कर लेता है, अपराणि :– दूसरे, जीर्णा :– कमजोर शब्दार्थ :–वासांसि :– कपडे ,जीर्णनि :– पुराने हुए, विहाय :– छोड कर,संयाति :– प्राप्त कर लेता है, देही :– जीवात्मा

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ द्वाविंशः गीतामृतम् ली गई है इसमें कृष्ण ने अर्जुन के शस्त्र त्याग कर देने पर दोनों सेनाओं के बीच में अर्जुन को जो कर्म करने का ज्ञान दिया था उसी का वर्णन है ।इस में जीवात्मा के पुराने शरीर को छोड़कर नए शरीर में जाने का वर्णन है ।

सरलार्थ :– जिस प्रकार मनुष्य पुराने एवं जीर्ण शीर्ण कपड़ों को छोड़कर नए कपड़ों को धारण करता है उसी प्रकार जीवात्मा पुराने शरीर को छोड़कर दूसरे नए शरीर को धारण करता है भाव जीवात्मा का नया जन्म नये कपड़ों को धारण करने जैसा होता है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावक :।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो ,न शोषयति मारुतः।। 4।।

शब्दार्थ :–न एनं :– न इस को छिन्दन्ति :–छेद सकता शास्त्राणि :– शस्त्र न एनम :– न इसको दहति :– जला सकता ,पावक :– आग

,क्लेदयन्ति :– गीला कर सकता ,आपो :– पानी ,शोषयति :– सुखा सकता ,मारुत :– हवा

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ द्वाविंशः गीतामृतम् में से ली गई है इसमें कवि ने अर्जुन के शस्त्र त्याग कर देने पर दोनों सेनाओं के बीच में अर्जुन को जो कर्म करने का ज्ञान दिया था उसी का वर्णन है ।इस में आत्मा को अजर अमर कहा गया है।

सरलार्थ :– इस आत्मा को न इसको शस्त्र काट सकता है ,न आग जला सकती है, न पानी गीला कर सकता है, न ही वायु सूखा सकती है अर्थात् आत्मा अजर अमर है।

हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महिम् ।

तस्मादुतिष्ठ कौन्तेय , युद्धाय कृत निश्चयः ।।5।।

शब्दार्थ :– वा :– यदि हतो :–मारे गये स्वर्गम :– स्वर्ग को ,प्राप्यसि :–प्राप्त करोगे, वा :– यदि ,जित्वा :– जीत गए, वा :–यदि, महिम :–धरती का राज, भोक्ष्यसि :–भोगोगे , तस्मात् :–इसलिए, कौन्तेय :–हे अर्जुन , उतिष्ठ :–उठो, युद्धाय :– युद्व के लिए ,कृत निश्चय :– दृढ़ निश्चय करो ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ द्वाविंशः गीतामृतम् में से ली गई है। इसमें कवि ने अर्जुन के शस्त्र त्याग कर देने पर दोनों सेनाओं के बीच में अर्जुन को जो कर्म करने का ज्ञान दिया था उसी का यहॉ वर्णन है ।इस में भगवान ने युद्ध करने और युद्ध न करने दोंनों ही परिस्थितियों में मिलने वाले फल के बारे में बताया है।

सरलार्थ :– श्री कृष्ण कहते है कि यदि मारे गये तो स्वर्ग को प्राप्त करोगे, यदि जीत गए तो धरती का राज भोगोगे इसलिए हे अर्जुन! उठो और युद्ध के लिए दृढ़ निश्चय करो ।भाव यह है कि दोनों ही स्थितियों में तुम्हें लाभ

होने वाला है।तुमने अच्छे कर्म किए हैं तो यदि मर गए तो स्वंग अवश्य मिलेगा ,यदि जीत गए तो राज्य का भोग करोगे ही ।

सुख दुःखे समे कृत्वा, लाभालाभौ ,जयाजयौ ।

ततो युद्धाय युज्यस्व , नैव पापमवाप्स्यसि ।।6।।

शब्दार्थ :– समे :– समान करके, लाभ :– फायदा अलाभौ :– हानि दोनों को ,युज्यस्व :– जुझो ,न एवं– इस प्रकार नहीं, अवाप्स्यसि :– छू भी नहीं सकेगा ।

प्रसंग:– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ द्वाविंशः गीतामृतम् में से ली गई है। इसमें कवि ने अर्जुन के शस्त्र त्याग कर देने पर दोनों सेनाओं के बीच में अर्जुन को जो कर्म करने का ज्ञान दिया था उसी का यहॉ वर्णन है ।इस में भगवान ने युद्ध करने को कहा है कर्म न करने से कर्म करना अच्छा है ।

सरलार्थ :– हे अर्जुन ! सुख दुःख ,लाभ हानि एवम् जय पराजय को समान समझ कर युद्ध के लिए जुझो इस प्रकार युद्ध करने से पाप तुमे छू भी नहीं सकेगा ।भाव यह है कि मन में सुख दुःख , लाभ हानि या हार जीत के भावों को लाए बिना तटस्थ हो कर युद्ध करोगे तभी तुम्हें पाप छू भी नहीं सकेगा।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।

वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर् मुनिरुच्यते ।।7।।

शब्दार्थ :– दुःखेषु :– दुःखों में ,अनुद्विग्नमना :–न विचलित होने वाले विगत स्पृह :–मोह छोड़ने वाले , वीत राग :– नष्ट हुए प्रेम लगाव वाले स्थित धीर :–**टि**के हुए मन वाले ,धैर्यवान ,मुनि :– महात्मा उच्यते :– कहते है

प्रसंग:– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ द्वाविंशः गीतामृतम में से ली गई है। इसमें कवि ने अर्जुन के शस्त्र त्याग कर देने पर दोनों सेनाओं के बीच में अर्जुन को जो कर्म करनें का ज्ञान

दिया था उसी का यहॉ वर्णन है ।इस में भगवान ने भय क्रोध राग द्वेष न करने को कहा है ।

सरलार्थ :– दु:खों में जो प्राणि विचलित नहीं होता और सुखों के प्राप्त होने पर मोह नहीं करता तथा जो अनुराग भय एवम् क्रोध से रहित है ऐसे स्थिर बुद्धि वाले धैर्यवान पुरुष को मुनि कहा है।

ध्यायतो विषयान् पुंसः, संगस् तेषूपजायते ।

संगात् संजायते कामः,कामात् क्रोधोऽभिजायते ।।8।।

शब्दार्थ :–ध्यायतो :– ध्यान करने से ,विषयान :– विषयों का, पुंसः :–मनुष्य के द्वारा ,संगस :– संग ,तेषु :–उनमें ,उपजायते :– पैदा हो जाता है,संजायते :– संग जन्म लेता है ,कामः :–काम वासना ,अभिजायते :–पैदा होता ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठय पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ द्वाविंशः गीतामृतम में से गई है। इसमें कवि ने अर्जुन के शस्त्र त्याग कर देने पर दोनों सेनाओं के बीच में अर्जुन को कर्म करनें का ज्ञान दिया था उसी का यहॉ वर्णन है ।इस में भगवान ने विषयों के ध्यान को बहुत खतरनाक बताया है । क्रोध आदि न करने को कहा है।

सरलार्थ :– भगवान कहते हैं कि मनुष्य के द्वारा विषयों का ध्यान करने से उनमें संग करने का भाव पैदा होता है ,संग करने के बाद कामनाऍ पैदा होती है कामनाओं की पूर्ति न होने पर क्रोध पैदा होता है भाव यह है कि विषयों में अधिक लगाव मनुष्य को पतन की और ले जाता है।

क्रोधाद् भवति संमोहः,संमोहात् स्मृति–विभ्रमः।

स्मृति–भ्रंशाद् बुद्धिनाशो ,बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।।9।।

शब्दार्थ:– क्रोधाद् :– क्रोद्ध करने से ,संमोह :– मोह ,स्मृति :– बुद्धि का ,विभ्रमः :– परदा पड़ना ,भ्रंशाद :– नष्ट होने से ,प्रणश्यति :– प्राणों का नाश

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ द्वाविंशः गीतामृतम् में से ली गई है। इसमें कवि ने अर्जुन के शस्त्र त्याग कर देने पर दोनों सेनाओं के बीच में अर्जुन को कर्म करने का ज्ञान दिया था उसी का यहाँ वर्णन है |इस में भगवान ने विषयों के ध्यान को बहुत खतरनाक बताया है | क्रोध आदि न करने को कहा है।

सरलार्थ :–क्रोध से मोह [ कर्तव्य अकर्तव्य का विवेक न होना ]पैदा होता है ,मोह से स्मरण शक्ति का नाश होता है | स्मरण शक्ति का नाश होने से प्राणों का नाश होता हैअर्थात मनुष्य ही नष्ट हो जाता है। भाव यह है कि मनुष्य को अपने क्रोध आदि भावों पर नियन्त्रण रखना चाहिए तभी जीवन बच सकता है अन्यथा तो जीवन नष्ट ही होना है।

यद् यदाचरति श्रेष्ठस् ,तत् तदेवेतरो जनः |

स यत् प्रमाणं कुरुते, लोकस् तदनुवर्तते ||10||

शब्दार्थः–यद् :– जो जो ,आचरति :– आचरण करता है, श्रेष्ठस् :– उतम व्यक्ति ,तत् तत् एव :– वह वह ही ,इतरो जनः– दूसरे लोग ,यत् :– जो प्रमाणं :–गवाही दे जाते हैं ,लोकस :–साधारण जन तद् :– उसी का अनुवर्तते :– अनुसरण करते है |

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ द्वाविंशः गीतामृतम् में से ली गई है। इसमें कवि ने अर्जुन के शस्त्र त्याग कर देने पर दोनों सेनाओं के बीच में अर्जुन को कर्म करनें का ज्ञान दिया था उसी का यहाँ वर्णन है |इसमें भगवान ने अर्जुन को बताया है कि उसके द्वारा किए गए कर्मो का लोग अनुसरण करेंगें इसलिए अकर्मण्यता न करने को कहा गया है |

सरलार्थ :– श्रेष्ठ पुरुष जो जो आचरण करता है दूसरे मनुष्यों के द्वारा वैसा वैसा ही आचरण किया जाता है क्योंकि वह जो जो प्रमाण करते हैं उसी ही का लोग अनुसरण करते हैं |

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर् भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य,तदात्मानं सृजाम्यहम्।।11।।

शब्दार्थ :–गलानिर् :– हानि भवति :– होती ,भारतः– अर्जुन ,अभ्युत्थानम् :– उदय के लिए धर्मस्य :– धर्म के ,तदात्मानम् :– तब अपने आप को ,सृजाम्यहम् :– अपनी रचना करता हूॅ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ द्वाविंशः गीतामृतम् में से ली गई है। इसमें कवि ने अर्जुन के शस्त्र त्याग कर देने पर दोनों सेनाओं के बीच में अर्जुन को कर्म करनें का ज्ञान दिया था उसी का यहॉ वर्णन है ।इस में भगवान ने अर्जुन को बताते हैं कि वह धर्म की हानि नहीं होने देते।

सरलार्थ :– भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन !जब जब धर्म की हानि होती है तब तब पृथ्वी पर पुनः धर्म की स्थापना करने के लिए मैं अवतार धारण करता हूॅ । भाव यह है कि जब जब धरा पर पाप का बोझ बढ़ने लगता है तब वह अवतार लेते हैं ।

परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।।12।।

शब्दार्थ :–परित्राणाय :–बचाने के लिए ,साधुनां :– सज्जनों को ,दुष्कृतां :– बुरा करने वालों ,संस्थापनाः– पुनः स्थापित ,अर्थाय :–करने के लिए ,संभवामि :– पैदा होता हूॅ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठय पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ द्वाविंशः गीतामृतम् में से ली गई है। इसमें कवि ने अर्जुन के शस्त्र त्याग कर देने पर दोनों सेनाओं के बीच में अर्जुन को कर्म करनें का ज्ञान दिया था उसी का यहॉ वर्णन है ।इस में भगवान ने अर्जुन को बताते हैं कि वह धर्म की हानि नहीं होने देते।

सरलार्थ :– पुण्य करने वाले साधुओं की रक्षा करने के लिए , दुष्टों का विनाश करने के लिए एवं धर्म की पुनः ठीक प्रकार स्थापना करने के लिए मैं [कृष्ण ]युग युग में अवतार लेता हूॅ।

पंचविशः पाठः

# मनु वचनानि

एतद् देश – प्रसूतस्य सकाशाद् अग्र–जन्मनः।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व– मानवा ।।13।।

शब्दार्थ :– एतद् :– इस देश में ,प्रसूतस्य :– पैदा हुए ,सकाशाद् :– साक्षी ,अग्रजन्मनः :– पहले जन्म लेने वाले,स्व :– अपने चरितं :– चरित्र की ,शिक्षेरन् :– शिक्षा लें पृथिव्यॉ :– धरती पर ,सर्व मानवा :– मनुष्य

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पंचविशः पाठः मनु वचनानि में से लिया गया है। इसमें कवि ने ब्राह्मणों की सर्वश्रेष्ठता के बारे में बताया है।

सरलार्थ :–इस देश में पहले जन्म लेने वाले और साक्षी ब्राह्मणों से इस पृथ्वी पर जन्म लेने वाले सब मानव अपने अपने चरित्र की शिक्षा लें ।

वेदः स्मृतिः,सदाचारः ,स्वस्य च प्रियात्मनः।

एतत् चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्।।14।।

शब्दार्थ :–वेद :–पवित्र पुस्तकें ,स्मृति :–याद बातें या मंत्र ,सदाचार :– सच्चा आचरण ,स्वस्य :– अपने आपसे प्रियात्मनः–अपने आप को प्रिय ,यही चार धर्म के लक्षण हैं।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पंचविशः पाठः मनु वचनानि में से लिया गया है। इसमें कवि ने धर्म के लक्षणों के बारे में बताया है।

सरलार्थः–वेदों को पढ़ना मंत्रों को स्मरण रखना,सद आचरण करना और अपने मन क अनुरुप कार्य करना यही धर्म के लक्षण हैं ।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयाद्,न ब्रूयाद सत्यमप्रियम्।

प्रियं च नानृतं ब्रूयाद् ,एष धर्मः सनातनः।।14।।

शब्दार्थ :– ब्रूयाद :– बोलें ,अप्रिय :–अच्छा न लगनें वाला अनृतं :– झूठ ,एषः :– यही सनातनः–प्रचीन काल से चला आ रहा ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पंचविशः पाठः मनु वचनानि में से लिया गया है। इसमें कवि ने बताया है कि सच किस प्रकार का बोलना चाहिए।

सरलार्थ :–सच बोलें,मीठा बोलें अप्रिय लगने वाला सच न बोलें ,और प्रिय लगने वाला झूठ भी न बोलें ,यही सनातन धर्म है।

दृष्टि पूतं न्यसेत पादं,वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।

सत्य–पूतां वदेद् वाचं,मनः पूतं समाचरेत्।।15।।

शब्दार्थ :–दृष्टि :–देखकर ,पूतं :–छानकर न्यसेत :– रखें ,पादं :– पैर ,वस्त्र :– कपड़े वदेद् :– बोलें मनः :– मन से पूतं :–विचार करके समाचरेत :– आचरण करें ,

प्रसंग :– यह लाइनें हमारी पाठय पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह पंचविशः पाठः मनु वचनानि में से लिया गया है। इसमें कवि ने बताया है कि सब काम बड़े ध्यान पूर्वक करने चाहिए हड़बड़ाहट से कोई काम नहीं करना चाहिए।

सरलार्थ :–ऑखों से भली प्रकार देखे हुए पर पैर रखे।कपड़े से भली प्रकार छान कर जल पिएॅ।सत्य से परख कर वचन बोलें मन से भली प्रकार सोच कर आचरण करें ।

यद् यत् पर– वशं कर्म, तत् तद् यत्नेन वर्जयेत्।

यद् यद् आत्म – वशं तू स्यात् ,तत् तत् सेवेत यत्नतः ||16||

शब्दार्थ :–यत यत :– जो जो पर :– दूसरे के वंश :–वश में तद तद :– वो वो यत्नेन :– प्रयत्न पूर्वक सेवेत :–करें यत्नतः :– प्रयत्न पूर्वक

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पंचविशः पाठः मनु वचनानि में से लिया गया है। इसमें कवि ने कहा है कि जो दूसरों के अधीन कर्म है उसकी चिंता छोड़कर जो अपने अधीन कर्म है उसे करना चाहिए ।

सरलार्थः–जो जो अपने अधीन कर्म है उसे प्रयत्न पूर्वक करना चाहिए जो जो कर्म दूसरे के करने से होंगे उन्हें उस पर छोड़ देना चाहिए ।

सर्वं पर वंशं दुःखं सर्वम् आत्मवंशं सुखम्।

एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुख दुःखयो ||17||

शब्दार्थः–सर्वं :– सबको परवंशं :– दूसरे के वंश में दुःखम् :– बैचेनी आत्मवंशम्:– अपने वंश में एतद् :–यही विद्यात् :– बनाए गए हैं समासेन :– लघु रूप में लक्षण :– नियम ।

प्रसंग :– यह लाइनें हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह पंचविशः पाठः मनु वचनानि में से लिया गया है। इसमें कवि ने सुख दुःख के लक्षण बताए है।

सरलार्थ :–सबको अपनी मर्जी से काम करने पर सुख होता है दूसरे के अधीन काम करने पर दुःख होता है लधु रूप से यही सुख और दुःख के लक्षण कहे गए है।

अभिवादन–शीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्, विद्या यशो बलम्।। 18।।

शब्दार्थ :–अभिवादन–शीलस्य :– नमस्कार करने वाले का ,नित्य :– रोज वृद्धोपसेविनः :–वृद्धजनों की सेवा करने वाले ,चत्वारि :– यह चार , तस्य :– उनके वर्धन्ते :– बढ़ते है ,

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पंचविशः पाठः मनु वचनानि में से लिया गया है। इसमें कवि ने कहा है कि वृद्धजनों की सेवा करने वाले के यह चार सदा बढते हैं आयु विद्या यश और बल इसलिए बुर्जुगों को हमेशा आदर से बुलाना चाहिए।

सरलार्थ :–इसमें कवि ने कहा है कि वृद्धजनों की सेवा करने वाले के यह चार सदा बढते हैं आयु विद्या यश और बल इसलिए बुर्जुगों को हमेशा आदर से बुलाना चाहिए।

तृणानि भूमिरुदकं ,वाक् चतुर्थी च सुनृता।

एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन।।19।।

शब्दार्थः–तृणाणि :–तिनकों से बना ,भूमिः–भूमि पर आसन ,उदकम् :–पानी च :– और चतुर्थी सुनृता :–मीठी ,वाकः– वाणी ,एतान्यपि :– यह चार सतां :– सज्जनों के ,गेहे :–घर में उच्छिद्ययन्ते :– नष्ट न कदाचन :–कभी कम नहीं होते।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह पंचविशः पाठः मनु वचनानि में से लिया गया है। इसमें कवि ने कहा है कि सदाचारी के घर में धन न होने पर भी कौन सी चीजें कभी खत्म नहीं होतीं ।

सरलार्थ :–तिनकों से बना[ चटाई आदि] भूमि पर आसन [स्थान,] पानी और चौथी मीठी वाणी ये चार सज्जनों के घर में कभी नष्ट नहीं होते।

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति ।

तथा तथा विजानाति ,विज्ञानं चास्य रोचते ।।20।।

शब्दार्थ :–यथा यथाः– जैसे जैसे पुरुषः–मनुष्य शास्त्रं :– शास्त्रों को अधिगच्छतिः–पढ़ता है विजानाति :–जानता है विज्ञानं :– सूक्ष्म ज्ञान, अस्यः– इसका रोचते :– रुचिकर लगता है ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाॅ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पंचविशः पाठ मनु वचनानि में से लिया गया है। इसमें कवि ने कहा है कि जैसे जैसे मनुष्य शास्त्रों को पढ़ता है वैसे वैसे इसका विशेष सूक्ष्म ज्ञान उसे बहुत रुचिकर लगता है।

सरलार्थ :–इसमें कवि ने कहा है कि जैसे जैसे मनुष्य शास्त्रों को पढ़ता है वैसे वैसे इसका विशेष सूक्ष्म ज्ञान उसे बहुत रुचिकर लगता है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्र अफलाः क्रिया।।21।।

शब्दार्थ :– यत्र :–जहाॅ नार्याः तु :–नारियों की,पूज्यन्ते :– पूजा होती है रमन्ते :–रमन करते तत्र :– वहाॅ यत्र एतातु :– जहाॅ इनकी सर्वाः :– सब तत्र :–वहाॅ अफला :– निष्फल क्रिया :–क्रियाएॅ

प्रसंग :– यह लाइनें हमारी पाठय पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह पंचविशः पाठः मनु वचनानि में से लिया गया है। इसमें कवि ने कहा है कि स्त्रियों का हमेशा सम्मान होना चाहिए ।

सरलार्थ :—जहॉ नारियों की पूजा होती है वहॉ देवता रमन करते हैं जहॉ इनका सम्मान नहीं होता वहॉ सब कार्य  निष्फल हो जाते हैं।

अष्टाविंशः पाठः

## यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः

यक्षः—

केनस्विच्छोत्रियो भवति?केनस्दि् विन्दन्ते महत्।

केनस्विद ्द्वितीयवान् भवति?राजन् केन च बुद्धिमान?22।।

शब्दार्थ :—केनस्विद् :— किससे ,श्रोत्रियो :— विद्वान ,विन्दते महत् :—बहुत पूजा जाता द्वितीयवान :— साथी वाला केन :—किससे

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई हैं।यह अष्टाविशः पाठः यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः में से ली गई हैं। इसमें युधिष्ठिर से यक्ष ने सवाल पूछा है क्योंकि वह उस बावड़ी का रक्षक हैं जहॉ से युधिष्ठिर के भाई जल पीना चाहते थे, परन्तु यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिए बिना कोई वहॉ से जल न पी सका इसलिए धर्मराज युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया ।

सरलार्थ :—  किससे  विद्वान होता है, किससे बहुत पूजा जाता है , किससे साथी वाला होता है, और किससे बुद्धिमान होता है।

युधिष्ठिर :—

श्रुतेन श्रोत्रियो भवति ,तपसा विन्दते महत्।

धृत्या द्वितीयवान् भवति,बुद्धिमान वृद्ध —सेवया।।23।।

शब्दार्थ :–श्रुतेन :–मंत्रों को याद करने से , श्रोत्रियोः– विद्वान, तपसा :– तपस्या करने से , विन्दतेः– वन्दनीय, धृत्याः– धैय रखने से , द्वितीयवानः– साथी वाला वृद्धः– बूढों को

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई हैं।यह अष्टाविशः पाठः ,यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः में से ली गईं हैं। इसमें युधिष्ठिर से यक्ष ने सवाल पूछा है क्योंकि वह उस बावड़ी का रक्षक हैं जहॉ से युधिष्ठिर के भाई जल पीना चाहते थे, परन्तु यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिए बिना कोई वहॉ से जल न पी सका इसलिए धर्मराज युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया ।

सरलार्थ :– मंत्र याद करने से विद्वान होता है, तप में तपने से बहुत पूजा जाता है , धैर्य रखने से साथी वाला होता है, और वृद्धों की सेवा करने से बुद्धिमान होता है।

यक्ष :– किं स्विद् गुरुतरं भूमे? किंस्विद् उच्चतरं च खात्।

किं स्विच्छीघ्रतरं वायो ? किंस्विद् लघुतरं तृणात्।।24।।

शब्दार्थ :– किंस्विद्ः– क्या ,गुरुतरंः– बड़ा है ,भूमेः– धरती से खातः–आसमान से, शीघ्रतरंः– तेज चलने वाला , वायो :– वायु से, तृणात्ः– तिनके से

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गईं हैं।यह अष्टाविशः पाठः ,यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः में से ली गईं हैं। इसमें युधिष्ठिर से यक्ष ने सवाल पूछा है क्योंकि वह उस बावड़ी का रक्षक हैं ,जहॉ से युधिष्ठिर के भाई जल पीना चाहते थे, परन्तु यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिए बिना कोई वहॉ से जल न पी सका इसलिए धर्मराज युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया ।

सरलार्थ :– कौन धरती से बड़ा है ? कौन आसमान से उॅचा है?कौन वायु से भी तेज चलने वाला ? कौन तिनके से भी हलका है?

युधिष्ठिरः–

माता गुरुतरा भूमेः,खात् पितोच्चतरस्तथा।

मनः शीघ्रतरं वाताद्, अर्थी लघुतरस् तृणात्।।25।।

शब्दार्थ :– गुरुतराः– बड़ी खातः–आसमान

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई हैं।यह अष्टाविशः पाठः ,यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः में से ली गई हैं। इसमें युधिष्ठिर से यक्ष ने सवाल पूछा है क्योंकि वह उस बावड़ी का रक्षक हैं जहॉ से युधिष्ठिर के भाई जल पीना चाहते थे, परन्तु यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिए बिना कोई वहॉ से जल न पी सका इसलिए धर्मराज युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया ।

सरलार्थ :–माता पृथ्वी से बडी है, पिता आसमान से उॅचा है,मन वायु से तेज है,भिक्षुक तिनकें से भी हल्का है।

यक्ष :–

किंस्वित् प्रवसतो मित्रम्,किस्विंन् मित्रं गृहे सतः।

आतुरस्य च किम् मित्रं, किस्विंन् मित्रं मरिष्यतः।।26।।

शब्दार्थ :– किंस्वित् :– कौन, प्रवसतोः– प्रवासी का, सतः:–है आतुरस्यः– बेचैन का मित्रं,:– साथी मरिष्यत्::– मरे हुए का,

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई हैं।यह अष्टाविशः पाठः ,यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः में से ली गई हैं। इसमें युधिष्ठिर से यक्ष ने सवाल पूछा है क्योंकि वह उस बावड़ी का रक्षक हैं जहॉ से युधिष्ठिर के भाई जल पीना चाहते थे, परन्तु यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिए बिना कोई वहॉ से जल न पी सका इसलिए धर्मराज युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया ।

सरलार्थः—प्रवासी का कौन मित्र है ?घर में कौन मित्र है?बेचैन का कौन मित्र है?मरे हुए का कौन मित्र है?

युधिष्ठिरः –

सार्थं प्रवसतो मित्रम्,भार्या मित्रं गृहे सतः।

आतुरस्य भिषक मित्रं, दानं मित्रं मरिष्यत्ः।।27।।

शब्दार्थ :—सार्थः—झुण्ड भार्याः— पत्नी भिषकः— वैद्य

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई हैं।यह अष्टाविशः पाठः ,यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः में से ली गई हैं। इसमें युधिष्ठिर से यक्ष ने सवाल पूछा है क्योंकि वह उस बावड़ी का रक्षक हैं जहाँ से युधिष्ठिर के भाई जल पीना चाहते थे, परन्तु यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिए बिना कोई वहाँ से जल न पी सका इसलिए धर्मराज युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया ।

सरलार्थः—प्रवासी का झुण्ड मित्र है ?घर में पत्नी मित्र है?बेचैन का वैद्य मित्र है?मरे हुए का दान मित्र है?

यक्ष :—

किंस्वित् एको विचरते, जातः को जायते पुनः।

किंस्विद् हिमस्य भैषज्यं, किंस्विद् आवपनं महत् ।।28।।

शब्दार्थ :—भैषज्यंः— औषैधि ,आवपनंः— क्षेत्र

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई हैं।यह अष्टाविशः पाठः ,यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः में से ली गई हैं। इसमें युधिष्ठिर से यक्ष ने सवाल पूछा है क्योंकि वह उस बावड़ी का रक्षक हैं जहाँ से युधिष्ठिर के भाई जल पीना चाहते थे, परन्तु यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिए बिना कोई वहाँ से जल न पी सका इसलिए धर्मराज युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया ।

सरलार्थः—कौन अकेला विचरता है,जन्म लिया हुआ कौन दुबारा जन्म लेता है,सर्दी में कौन मित्र है ,कौन से क्षेत्र बहुत बड़ा है।

युधिष्ठिरः—

सूर्य एको विचरते ,चन्द्रमा जायते पुनः

अग्निहिर्मस्य भैषज्यं, भूमिरावपनं महत्।।29।।

शब्दार्थ :—भैषज्यंः— औषधी आवपनंः— क्षेत्र

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8में से ली गई हैं।यह अष्टाविशः पाठः ,यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः में से ली गई हैं। इसमें युधिष्ठिर से यक्ष ने सवाल पूछा है क्योंकि वह उस बावड़ी का रक्षक हैं जहॉ से युधिष्ठिर के भाई जल पीना चाहते थे, परन्तु यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिए बिना कोई वहॉ से जल न पी सका इसलिए धर्मराज युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया ।

सरलार्थः—सूर्य अकेला विचरता है,जन्म लिया हुआ चन्द्रमा दुबारा जन्म लेता है,सर्दी में अग्नि का ताप मित्र है ,पृथ्वी का क्षेत्र बहुत बड़ा है।अर्थात् बहुत बड़ा है।

यक्षः :—

किं नु हत्वा प्रियो भवति ,किं नु हत्वा न शोचति।ककक

किं नु हत्वाऽर्थवान भवति ?किं नु हत्वा सुखी भवेत ।।30।।

शब्दार्थ :—किम :—किसे हत्वा :—मारकर शोचति :— शोक दुःख,

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई हैं।यह अष्टाविशः पाठः ,यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः में से ली गई हैं। इसमें युधिष्ठिर से यक्ष ने सवाल पूछा है क्योंकि वह उस बावडी का रक्षक हैं जहॉ से युधिष्ठिर के भाई जल पीना चाहते थे, परन्तु यक्ष के प्रश्नों का

उत्तर दिए बिना कोई वहॉ से जल न पी सका इसलिए धर्मराज युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया ।

सरलार्थः—किसे मार कर सबका प्रिय हो जाता है,किसे मारकर शोक नहीं होता किसे मारकर धनवान होता है किसे मारकर सुखी होता है।

युधिष्ठिर :—

मानं हत्वा प्रियो भवति ?क्रोधं हत्वा न शोचति?

कामं हत्वाऽर्थवान् भवति ?लोभं हत्वा सुखी भवेत् ।31।

शब्दार्थ :—किम् :—किसे, हत्वा :—मारकर ,अर्थवान :— पैसे वाला, भवेत :—

होता है।

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई हैं ।यह अष्टाविशः पाठः ,यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः में से जी गई हैं। इसमें युधिष्ठिर से यक्ष ने सवाल पूछा है क्योंकि वह उस बावड़ी का रक्षक हैं जहॉ से युधिष्ठिर के भाई जल पीना चाहते थे, परन्तु यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिए बिना कोई वहॉ से जल न पी सका इसलिए धर्मराज युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया ।

सरलार्थः—मान को मार कर सबका प्रिय हो जाता है ।क्रोध को मारकर शोक नहीं होता। काम को जीत कर धनवान होता है ,लोभ को मारकर सुखी होता है।

यक्ष :—

कः शत्रुर् दुर्जयः पुसां ?कश्च व्याधिरनन्तकः?

कीदृशश्च स्मृतः साधु ?असाधुः कीदृशः स्मृतः?32।

शब्दार्थः—कः :— कौन से दुर्जय :—मुश्किल से पुसां :— मनुष्यों के लिए व्याधिः अनन्तकः— रोग का नाश स्मृतः:— स्मरण किया जाता

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह अष्टाविशः पाठः ,यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः में से ली गईं हैं। इसमें युधिष्ठिर से यक्ष ने सवाल पूछा है क्योंकि वह उस बावड़ी का रक्षक हैं जहॉ से युधिष्ठिर के भाई जल पीना चाहते थे, परन्तु यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिए बिना कोई वहॉ से जल न पी सका इसलिए धर्मराज युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया ।

सरलार्थः– कौन से शत्रु मनुष्यों के लिए मुश्किल से जीता जाता है। किससे रोग का नाश होता है। साधु कैसा होता है।दुष्ट किसे कहतें हैं।

युधिष्ठिर :–

क्रोध शत्रुर् दुर्जयः पुसां?लोभो व्याधिरनन्तकः?

सर्व– भूत– हितरतः साधु?असाधुः निर्दयः स्मृतः?33।

शब्दार्थः–दुर्जय :– मुश्किल से पुसां :– मनुष्यों के लिए व्याधिः अनन्तकः– रोग का नाश स्मृतः:– स्मरण किया जाता

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह अष्टाविशः पाठः ,यक्ष युधिष्ठिरयोः संवादः में से ली गईं है। इसमें युधिष्ठिर से यक्ष ने सवाल पूछा है क्योंकि वह उस बावड़ी का रक्षक हैं जहॉ से युधिष्ठिर के भाई जल पीना चाहते थे, परन्तु यक्ष के प्रश्नों का उतर दिए बिना कोई वहॉ से जल न पी सका इसलिए धर्मराज युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का उतर दिया ।

सरलार्थः– क्रोध मनुष्यों के लिए मुश्किल से जीता जाने वाला शत्रु है। लोभ न करने से रोगों का नाश होता है। सब प्राणियों का कल्याण करने वाला साधु होता है। निंदयी को दुष्ट कहतें हैं।

त्रिंशत पाठः

अन्त्याक्षरी

राजवीर :–

अविचार्य न वक्तव्यं वक्तव्यं सुविचारितं।

ननु तत्रैव वक्तव्यं,यत्रोक्तं सफलं भवेत् ।34 ।[ त]

शब्दार्थ :– अविचार्य :– बिना विचारे वक्तव्यं :–न बोलें सुविचारितंः– ठीक प्रकार विचार करके ,तत्रैव :– वहीं ,यत्रोक्तंः– जहॉ कहा गया

प्रसंग :– यह लाइनें हमारी पाठय पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से लिया गया है। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है ।

सरलार्थः–बिना विचार किए न बोलें, अच्छी प्रकार विचार करके बोलें निश्चय से वहीं बोले जहॉ बोला गया सार्थक हो ।

सर्वे छात्राः :–

अहहा! अहहा!पुनरपि पुनरपि पठ ।

[ राजीव तम् एव श्लोकं पुनरपि पठति ]

राजेश :–

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव

त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव

त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।35।।[ व ]

शब्दार्थ :– त्वमेव :–तुम ही मम :– मेरे द्रविणंः–द्रवित होने वाले तुमीं हो धन संपत्ति ।

प्रसंग :– यह लाइनें हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गईं हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग

हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है ।

सरलार्थः–तुम्हीं मेरे माताहो, तुम्हीं मेरे पिता हो, तुम्हीं सखा हो तुम्हीं बन्धु हो ,तुम्हीं विद्या हो द्रवित होने वाले धन संपत्ति भी तुम ही हो हे देव! मेरे सब कुछ तुम ही हो ।

राकेश :–

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्ति परेषां पर पीडनाय ।

खलस्य साधो विपरीतम् एतद् ज्ञानाय दानाय च

रक्षनाय।।12।।[ य]

शब्दार्थः– खलस्य :– दुष्ट की ; विद्या :– पढाई ; विवादाय :– झगड़े के लिए ;मदाय :– अहंकार के लिए ; पर :दूसरों को ;पीडनाय :– दुःखी करने के लिए ;साधो :– सज्जन की ; विपरीतम्:– उलट ; ज्ञानाय :– ज्ञान देने के लिए ;दानाय :– दान देने के लिए ; रक्षा करने के लिए;

प्रसंग :– प्रस्तु पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गई हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है ।

सरलार्थ :– दुष्ट की विद्या झगड़ेके लिए ,धन अहंकार के लिए एवं शक्ति दूसरों को पीड़ित करने के लिए होती हैं इसके विपरीत साधु की विद्या दूसरों को ज्ञान देने के लिए एवं धन दूसरों को मदद करने के लिए एवं शक्ति दूसरों की रक्षा करने के लिए होती है।

दिनेशः–

यथा देशस्तथा वेषः,यथा राजा तथा प्रजा।

यथा क्षेत्रं तथा सस्यं,यथा बीजं तथा फलं।।13।।[ ल ]

शब्दार्थ :—यथा :— जैसा वेश :— भेष भूषा सस्यं :— खेती

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गईं हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है ।

सरलार्थ :—जैसा देश, वैसा भेष, जैसा राजा, वैसी प्रजा ,जैसा खेत, वैसी फसल, जैसा बीज ,वैसा फल।।

आलोक :—

लोभो मूलं विनाशस्य लोभात कामो विवर्धते

कामात् क्रोधस्,ततो मोहः ,मोहाद् लोको विनश्यति।।14।[ त ]

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गईं हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है ।

सरलार्थ:—विनाश का मूल कारण लोभ है लोभ से काम बढता है ।काम से क्रोध फिर मोह ,मोह होने से लोक का नाश हो जाता है।

विवेक :—

'तैलाद् रक्षेत् ,जलाद् रक्षेद् ,रक्षेद् रक्षेत शिथिल

बंधनात।

मूर्ख —हस्ते न दातव्यम्,' एवं वदति पुस्तकं।।15[ क ]

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गईं हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो

वर्ग हैं, पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है ।

शब्दार्थ :—पुस्तक कहती है जल से मेरी रक्षा करें तेल से मेरी रक्षा करें ढीला बांधने से रक्षा करें आौर मूर्ख के हाथ में कभी न दें

शशांक:—

कोऽतिभारः सर्मथानां किं दूरं व्यवसायिनाम्।

को विदेशः सविद्यानां ,कः परःप्रियवादिनाम्।।[ न ]

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गईं हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है ।

सरलार्थः—सर्मथवानों के लिए कौन सा काम भार है।व्यवसायियों के लिए कौन सी जगह दूर है विद्वानों के लिए कौन सा देश विदेश है।प्रिय बोलने वालों के लिए कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है।

सुवीर :—

नास्ति विद्या सम बन्धु न च सत्य सम सखा।

नास्ति रोग सम दुःखम् न च त्याग समं सुखम्।।[ख ]

. प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गईं हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है ।

सरलार्थः—विद्या के समान कोई बन्धु नहीं है ,सत्य के समान कोई सखा नहीं है ,रोग के समान कोई दुःख नहीं है ,त्याग के समान कोई सुख नहीं है

लोकेश :–

खलः सर्षप– मात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति ।

आत्मनो बिल्वः मात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति ।।10।।[ ]

शब्दार्थ :– खल :– दुष्ट ; सर्षप :– सरसों के दाने के; मात्राणिः– बराबर ;पर :– दूसरे के ; छिद्राणि :– दोष को ;पश्यति :– देखता है ;

आत्मनो :–अपने ; बिल्व :– बेल के फल के समान बड़े से ;पश्यन्न अपि :–देखते हुए भी ; न :–नहीं ।

प्रसंग :–प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गई हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है ।

सरलार्थः–दुष्ट सरसों के दाने के बराबर भी यानि बहुत कम दोष होने पर भी दूसरे के दोष को बहुत बडा मानता है। और अपने में बिल्व फल के समान बहुत बड़े बड़े दोष हो ने पर भी अपने आप को नहीं देखता है।

प्रदीपः–

सरलार्थः–दुष्ट सरसों के दाने के बराबर भी यानि बहुत कम दोष होने पर भी दूसरे के दोष को बहुत बड़ा मानता है। और अपने में बेल के फल के समान बहुत बड़े बड़े दोष हो ने पर भी अपने आप को नहीं देखता है।अर्थात् अनदेखा कर देता है।

प्रकाशः–

तास्तु वाचः सभाः योग्या याश्चिताकर्षण क्षमा।

मित्रामित्र तटस्थानां ज्ञानाज्ञानवतामपि।।[ ]

प्रसंग :– यह लाइनें हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गई हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग

हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है ।

सरलार्थ :–वह वचन बोलनें चाहिए जो सभा में मित्र शत्रु तटस्थ ज्ञानी और अज्ञानी सब के मन को हर लें अर्थात् बोलने के योग्य हों

प्रदीपः–

पुस्तक स्था तु या विद्या, पर हस्तगतम् यत धनम्

कार्य काले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद् धनम् ।।12।[ न ]

शब्दार्थः–स्था :– में ; या :–जो ;पर :– दूसरे के ;हस्त :– हाथ में ; गतम् :– गया हुआ ; यत् :– जो ;धनम् :– धन है।

कार्य काले :–काम ; समुत्पन्नें:– आने पर ;न :–नहीं ; सा :– वह ; विद्या :–विद्या है ; तद् :– वह ; धनम् :– धन धन है।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गईं हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है ।

सरलार्थ :– पुस्तकों में जो विद्या है, और दूसरे के हाथ में जो धन है , आप को काम आने पर ना वो विद्या, विद्या है और ना वो धन ,धन है। भाव यह है कि विद्या को कंठस्थ करना चाहिए और धन को अपने पास रखना चाहिए ।

सन्दीप :–

न कश्चिदपि जानाति, किं कस्य श्वो भविष्यति।

अतः श्वः करणीयानि कुर्यादद्यैव सन्मति ।13। [ त ]

शब्दार्थः–कश्चिद अपि :– कोई भी जानाति :–जानता कस्य :– किसका श्वो :– कल भविष्यति :– होगा करणीयानि :– करने वाले को कुर्याद :– करलें, अद्य एवः– आज ही सन्मति :– सदबुद्धि है

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गईं हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता।

सरलार्थः–कोई नहीं जानता कल क्या होगा कैसा होगा ? अतः कल करने वाले काम को आज ही कर लें यही सद्बुद्धि है।

नीरजः–

तस्य संकुचिता बुद्धिः धृत बिन्दुर्यथा जले।

यो न संचरते देशान् पण्डितान सेवते न यः।14।[ य ]

शब्दार्थ :–तस्य :– उसकी संकुचिता :– छोटी धृत :– धी संचरते :– विचरन करता पण्डितान :– विद्वानों को

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गईं हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है।

सरलार्थः–उसकी बुद्धि जल में धी की बूंद की तरह संकुचित रह जाती है जो न अपने देश में धूमता है और न विद्वानों की सेवा करता है।

प्रवीर :–

यस्तु संचरते देशान्, सेवते यश्च पण्डितान्।

तस्य बुद्धिर्विकसिता, तैल बिन्दुर्यथा जले।15।[ ल ]

शब्दार्थ :–तस्य :– उसकी संकुचिता :– छोटी तैल :– तैल संचरते :– विचरन करता ,पण्डितान :– विद्वानों को

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाॅ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठ अन्त्याक्षरी में से ली गई हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है।

सरलार्थः– जो अपने देश में धूमता है और विद्वानों की सेवा करता है। उसकी बुद्धि ,जल में तेल की बूंद की तरह विस्तार को प्राप्त होती है।

प्रबोध :–

लभ्यन्ते पुरुषा राजन्, सततं प्रियवादिनः

अप्रिय तु पथ्यस्य वक्ता ,श्रोता च दुर्लभः।16।[भ

शब्दार्थः– लभ्यन्तेः– मिलते , सततंः– मिलते , प्रियवादिनः:– मीठा बोलने वाले , पथ्यस्यः– हितकारी ,

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाॅ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है।यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गईं हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है।

सरलार्थः– इस में बताया गया है कि संसार में चापलूसों की कमी नहीं हैपरन्तु कड़वा सत्य बोलने वाले बहुत कम हैं।

राज सिंह :–

भ्रमराः रसमिच्छन्ति, व्रणमिच्छन्ति मक्षिकाः।

सज्जनाः गुणमिच्छन्ति, दोषमिच्छन्ति दुर्जनाः |17 |

शब्दार्थ :– भ्रमराः भंवरे मक्षिका :–मक्खी, दुर्जनाः:– दुष्ट इच्छन्ति :– चाहते

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है |यह त्रिंशः पाठ अन्त्याक्षरी में से ली गई हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है |यह त्रिंशः पाठः अन्त्याक्षरी में से ली गई हैं। इसमें विद्यार्थियों के दो वर्ग हैं पहला वर्ग एक श्लोक पढ़ता है और दूसरा वर्ग पहले द्वारा बोले गए श्लोक के अन्तिम वर्ण से श्लोक शुरु करता है।

सरलार्थः–भंवरे रस चाहते हैं ,मक्खी घाव चाहती है, सज्जन गुण चाहते है, और दुर्जन दोष चाहते है।